।। श्री दुर्गा अकंपात दाक्षायणि बिंदु - स्तोत्र ।।

श्री श्री श्री श्री श्री १०००८ स्वामी शिशू सत्यविदेहानंद सरस्वती विरचित

।। श्री दुर्गा अकंपात दाक्षायणि बिंदु - स्तोत्र ।।

हे माँ दुर्गे आप के चरण कमल हमारे हृदय में रहें,

आप हमारे मानस में नित्य बसो ।

हे माँ दुर्गे

दया करो,

क्षमा करो,

कृपा करो,

ममता करो,

करूणा करो,

रक्षा करो,

छोटी कन्या बनकर हमारे साथ खेला करो ।।

मंत्र - ॐ दुं दुर्गाय चरणम् शरणम् मम्

ॐ सर्व याचना तारणहार

ॐ दुं दुर्गे मेरी सुनो पुकार । दिव्य याचना तारणहार ।।१

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रींकारी । ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रींकारी ।।२

ॐ क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लींकारी । ॐ ऐ ऐ ऐ ऐ ऐकारी ।।३

ॐ मन तन तव अर्पण गौरी । जय जगदानंदे जय जय गौरी ।।४

दाक्षायणि यक्षिणि अंबे । शिव - रमणि - सति - हे रम्बे ।।५

आद्या शक्ति नाम तुम्हारा । रेण बसो - भिलवाडा साहारा ।।६

ह्रीं कुल - कुल उद्धारो माई । ऐं माहाराष्ट्रा लासुर आई ।।७

स्वामी विदेही की कुलदेवी । मारवाड - माहाराष्ट्रा सहदेवी ।।८

दक्ष यज्ञ मे सती होई । एक्कावन शक्ति पिठ सोई ।।९

नऊरात्रौ मे ध्यान तुम्हारा । नऊ उपवास - आरती से पारा ।।१०

साधु संत सत्संग - अधिकाई । सात सहस्त्र अवतार दिखाई ।।११

जप तप ध्यान ज्योति विचारा । भक्त मनोरथ पुर्ण अधिकारा ।।१२

रेण मे माता डाकु लडाई । हस्त प्रहार से वही स्थिराई ।।१३

दुर्गा - काली - लक्ष्मी रुपा । देवो - वेदो सार अनुपा ।।१४

अविद्या - बंधन - शुन्य कल्पा । प्रवृत्ती - निवृत्ती - स्थित स्वल्पा ।।१५

समाधि भोग - रोग छुडावे । यक्षिणि माता अति शिघ्र पावे ।।१६

ॐ जय जय जय यक्षिणि जाखण माता । स्वामि विदेही अनुपम बल प्रदाता ।।१७
बल, बुद्धि, विद्या की तुम प्रमाता । संसार तिर्णव तुम ही मे समाता ।।१८
स्मरण करे तव मात हो गौरी । भय संकट कैसे । तव हाथ मे डोरी ।।१९
हे जगतजननी दाक्षायणि माता । इक्यावन पिठ शक्ति जगमाता ।।२०
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को तारा । अनाहत शब्द ब्रह्माण्ड उबारा ।।२१
अनुकुल - प्रतिकुल स्थिती सताई । तव ध्यान दुर्गे प्रिती जताई ।।२२
प्रताडना दक्षे अनलख मारे । शव - शरिरो तव नाम उपचारो ।।२३
प्रतिमास जब अष्टमि उपवासा । भक्ति, ज्ञान, स्मरण लवलासा ।।२४
ससप्तमी दक्षे सप्तजनम फेरा । हृदय निवास तव जगदम्ब डेरा ।।२५
षष्ठि षोडशी श्री विद्या दिखाई । प्रति -नित सप्तशती मन्त्र सिखाई ।।२६
पंचम पंचतत्व मन मोहा । दाक्षायणि जय जय जगदम्बे दोहा ।।२७
चतुरथी चार वेद निहारे । स्वामी विदेही आरती ऊतारे ।।२८
तृतीया तवमां चरण पखारा । गर्जत -बर्जत जय घोष हमारा ।।२९
दुज को बरत दुर्गे दुर्गती हटावे । तव चरण कमल माते मोक्ष पावे ।।३०
एकंम मां दक्षे रुप अद्वेत दिखावे । दुर्गा नाम जपत कष्ट ना आवे ।।३१
कुल -कुंडलीनी माता गौरव बढावे । जप तप जोगी संसारी परमपद पावे ।।३२
जब उन्मत भैरव तव संग लडाई । शिर काट मैया जगह बताई ।।३३
संसार ताप मां, जब जब ढायें । दौडती कृपा तेरी ममता से झाके ।।३४
जो भी पढे यह, स्तोत्र छतीसा । जीवन सुधरे उसका झुके न शीसा ।।३५
जय जगदानन्दे जय जय यक्षिणि । जय पर्वत पुत्री जय दाक्षायणि ।।३६
अंतर तमस मे ज्योति जगाये । दिव्य - ज्ञान का अमृत पिलावे ।।३७
ज्ञान - विज्ञान समरथ दिखाये । दाक्षायणि अम्बे मनसन्ताप सुखावे ।।३८
नाम रुपो की तव अनंत गाथा । स्वामी विदेही मुख भरभर गाता ।।३९
स्नेह ऊपाधी दर्शन मित दर्पण । माता दक्षे तुमको मनभक्ति अर्पण ।।४०
शब्द व्यापकता सुक्षम छंदा । मानस अगोचर - सब गोचर कंदा ।।४१
मल विक्षेपता निर्मुल स्वकर्मा । आवरण शेषता उपासना घर्मा ।।४२
निश्चल - आत्मानुसंधानो माते । ज्ञान संपन्नता तव प्राप्ती दाते ।।४३
ब्रह्म निरुपणम् सद्गुरु कृपा । प्रपंच निद्ध्यासन सकृत रुपा ।।४४
साक्षात्कार मे बसे अनल - अलंबा । जय जय जय नमस्ते यक्षिणि अम्बा ।।४५